



Lalita

29 Jun 2016

10:44 PM

Jaynagar

Model: Web-MyKundli

Order No: 121854201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 29/06/2016
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 22:44:00 घंटे
इष्ट _____: 44:30:01 घटी
स्थान _____: Jaynagar
राज्य _____: West Bengal
देश _____: India

अक्षांश _____: 22:10:00 उत्तर
रेखांश _____: 88:21:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:23:24 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 23:07:24 घंटे
वेलान्तर _____: -00:03:31 घंटे
साम्पातिक काल _____: 17:40:16 घंटे
सूर्योदय _____: 04:55:59 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:24:06 घंटे
दिनमान _____: 13:28:06 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 14:17:03 मिथुन
लग्न के अंश _____: 29:23:15 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: अश्विनी - 4
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: सुकर्मा
करण _____: विष्टि
गण _____: देव
योनि _____: अश्व
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: ला-लक्ष्मी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कर्क

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1938	आषाढ़	8
पंजाबी	संवत : 2073	आषाढ़	16
बंगाली	सन् : 1423	आषाढ़	15
तमिल	संवत : 2073	आनी	15
केरल	कोल्लम : 1191	मिथुनम	15
नेपाली	संवत : 2073	आषाढ़	16
चैत्रादि	संवत : 2073	आषाढ़	कृष्ण 9
कार्तिकादि	संवत : 2073	ज्येष्ठ	कृष्ण 9

पंचांग

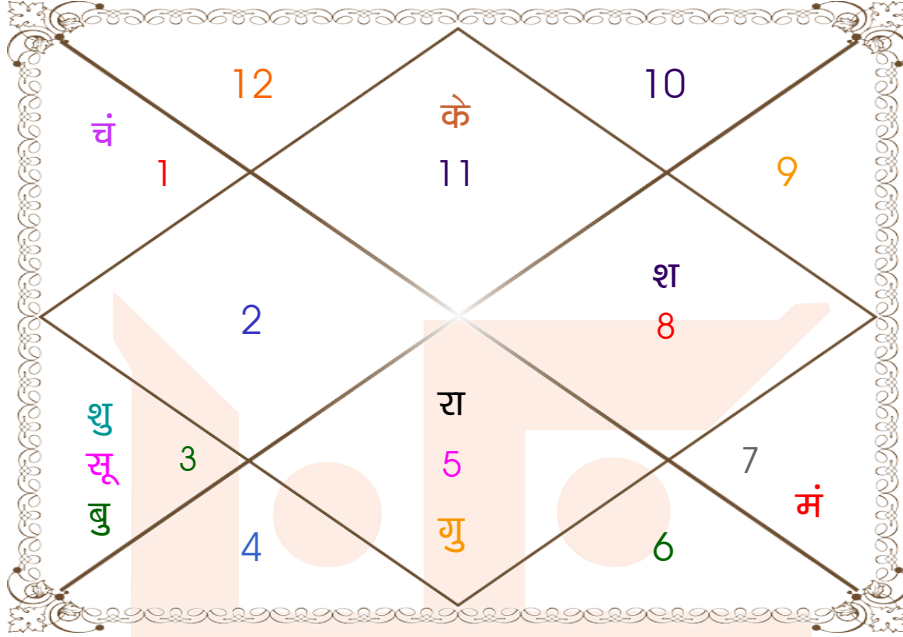
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 9
तिथि समाप्ति काल _____ : 08:31:33
जन्म तिथि _____ : 10
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : रेवती
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 05:38:11 घंटे
जन्म योग _____ : अश्विनी
सूर्योदय कालीन योग _____ : अतिगण्ड
योग समाप्ति काल _____ : 15:41:24 घंटे
जन्म योग _____ : सुकर्मा
सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
करण समाप्ति काल _____ : 08:31:33 घंटे
जन्म करण _____ : विष्टि
भयात _____ : 42:44:31
भभोग _____ : 55:43:08
भोग्य दशा काल _____ : केतु 1 वर्ष 7 मा 19 दि

घात चक्र

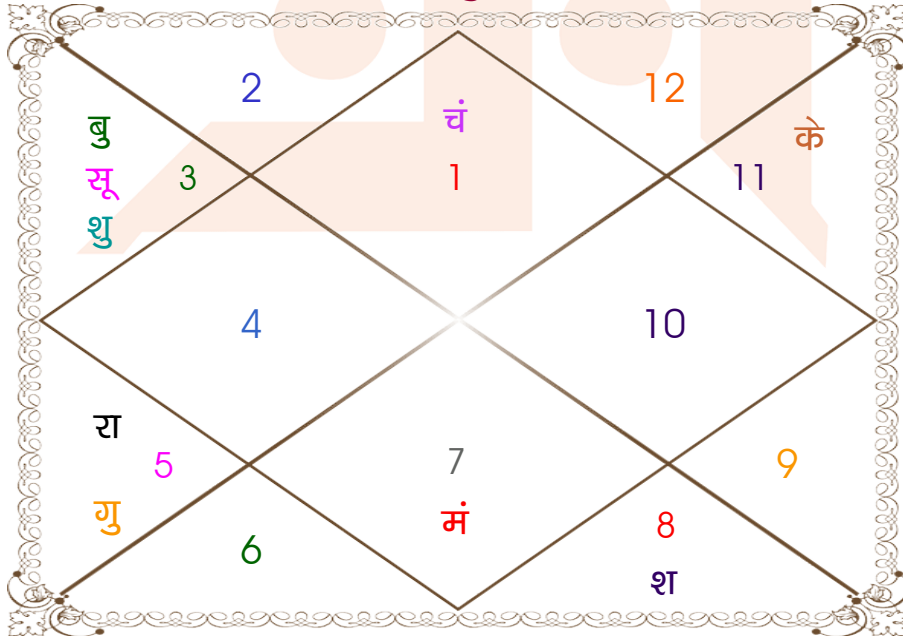
मास _____ : कार्तिक
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : रविवार
नक्षत्र _____ : मघा
योग _____ : विष्कुम्भ
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : मेष
सूर्य _____ : कर्क
चन्द्र _____ : मेष
मंगल _____ : सिंह
बुध _____ : वृष
गुरु _____ : कन्या
शुक्र _____ : तुला
शनि _____ : मिथुन
राहु _____ : वृश्चिक

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

	चं		शु सू बु
के ल			
			रा गु
	श	मं	

लग्न कुण्डली

शु बु	चं	के ल
सू		
गु रा	मं	श

विंशोत्तरी
केतु 1वर्ष 7मा 19दि
केतु

29/06/2016

19/02/2131

केतु	17/02/2018
शुक्र	17/02/2038
सूर्य	18/02/2044
चन्द्र	17/02/2054
मंगल	17/02/2061
राहु	18/02/2079
गुरु	18/02/2095
शनि	18/02/2114
बुध	19/02/2131

योगिनी

भ्रामरी 0वर्ष 11मा 6दि

उल्का

06/06/2022

06/06/2028

उल्का	07/06/2023
सिद्धा	06/08/2024
संकटा	06/12/2025
मंगला	05/02/2026
पिंगला	06/06/2026
धान्या	06/12/2026
भ्रामरी	07/08/2027
भद्रिका	06/06/2028

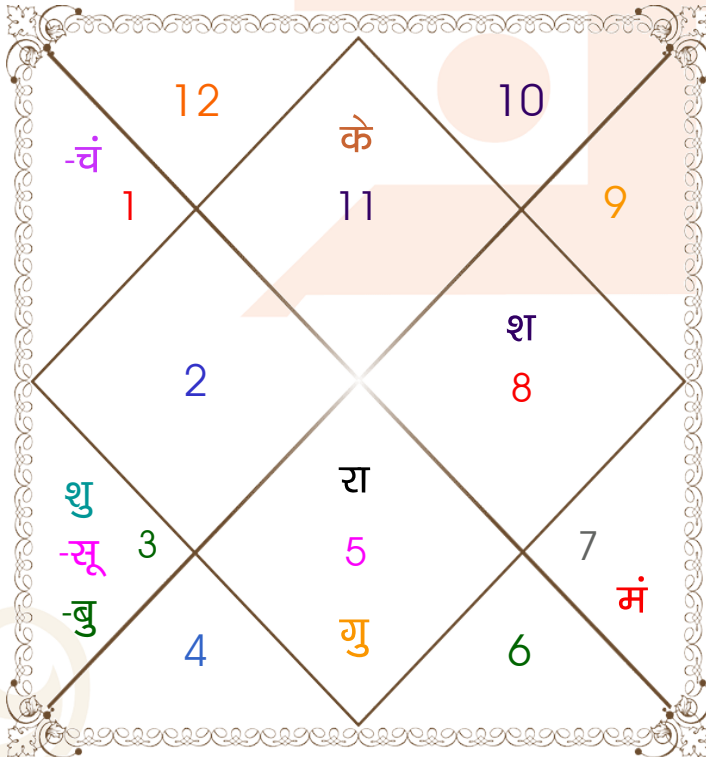
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	29:23:15	476:24:33	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	सूर्य	---
सूर्य			मिथु	14:17:03	00:57:13	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	बुध	सम राशि
चंद्र			मेष	10:12:54	14:24:06	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	शनि	सम राशि
मंगल	व		तुला	28:58:19	00:00:13	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	सूर्य	सम राशि
बुध		अ	मिथु	05:22:24	02:05:56	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	सूर्य	स्वराशि
गुरु			सिंह	22:48:56	00:07:58	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	मित्र राशि
शुक्र		अ	मिथु	20:31:59	01:13:44	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	गुरु	मित्र राशि
शनि	व		वृश्चि	17:11:02	00:03:41	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	शत्रु राशि
राहु	व		सिंह	21:06:43	00:03:38	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि
केतु	व		कुंभ	21:06:43	00:03:38	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष			मेष	00:03:21	00:01:26	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	केतु	---
नेप	व		कुंभ	17:53:13	00:00:30	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	सूर्य	---
प्लूटो	व		धनु	22:19:26	00:01:28	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	---
दशम भाव			धनु	01:23:02	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	शुक्र	--

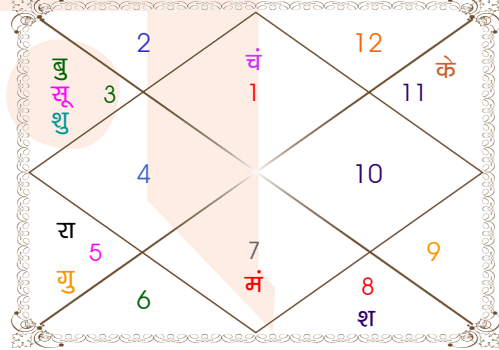
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:05:11

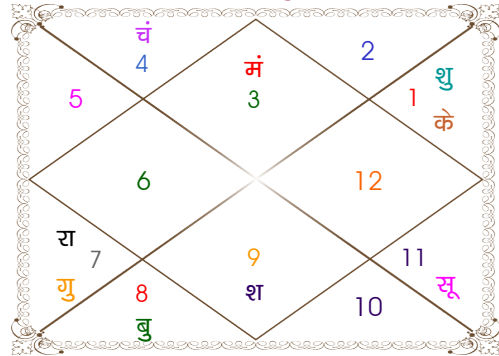
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 14:43:13	कुम्भ 29:23:15
2	मीन 14:43:13	मेष 00:03:10
3	मेष 15:23:08	वृष 00:43:06
4	वृष 16:03:04	मिथुन 01:23:02
5	मिथुन 16:03:04	कर्क 00:43:06
6	कर्क 15:23:08	सिंह 00:03:10
7	सिंह 14:43:13	सिंह 29:23:15
8	कन्या 14:43:13	तुला 00:03:10
9	तुला 15:23:08	वृश्चिक 00:43:06
10	वृश्चिक 16:03:04	धनु 01:23:02
11	धनु 16:03:04	मकर 00:43:06
12	मकर 15:23:08	कुम्भ 00:03:10

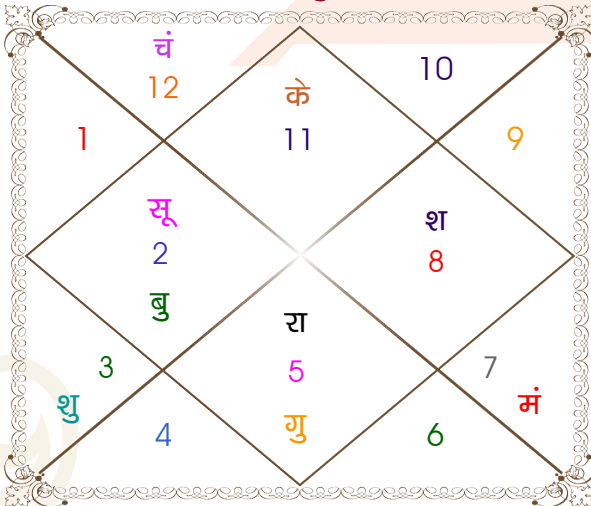
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	29:23:15
2	मेष	06:16:59
3	वृष	06:01:29
4	मिथुन	01:23:02
5	मिथुन	26:10:42
6	कर्क	24:16:06
7	सिंह	29:23:15
8	तुला	06:16:59
9	वृश्चिक	06:01:29
10	धनु	01:23:02
11	धनु	26:10:42
12	मकर	24:16:06

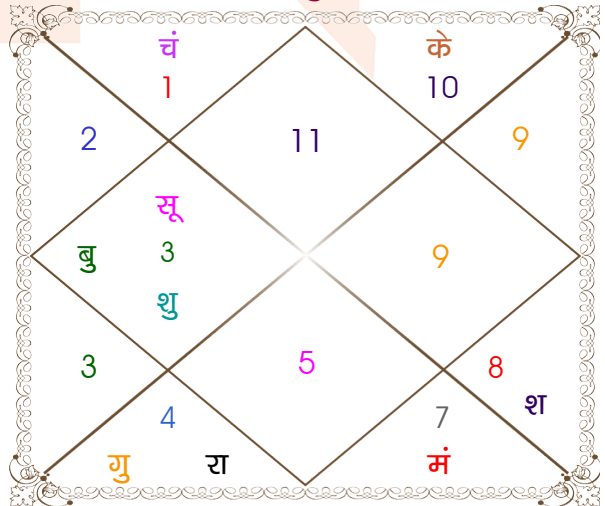
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 1 वर्ष 7 मास 19 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
29/06/2016	17/02/2018	17/02/2038	18/02/2044	17/02/2054
17/02/2018	17/02/2038	18/02/2044	17/02/2054	17/02/2061
00/00/0000	शुक्र 19/06/2021	सूर्य 07/06/2038	चंद्र 18/12/2044	मंगल 17/07/2054
00/00/0000	सूर्य 19/06/2022	चंद्र 07/12/2038	मंगल 19/07/2045	राहु 04/08/2055
00/00/0000	चंद्र 18/02/2024	मंगल 13/04/2039	राहु 18/01/2047	गुरु 10/07/2056
00/00/0000	मंगल 19/04/2025	राहु 07/03/2040	गुरु 19/05/2048	शनि 19/08/2057
00/00/0000	राहु 19/04/2028	गुरु 24/12/2040	शनि 19/12/2049	बुध 16/08/2058
00/00/0000	गुरु 19/12/2030	शनि 06/12/2041	बुध 20/05/2051	केतु 12/01/2059
29/06/2016	शनि 17/02/2034	बुध 13/10/2042	केतु 19/12/2051	शुक्र 13/03/2060
शनि 20/02/2017	बुध 18/12/2036	केतु 18/02/2043	शुक्र 19/08/2053	सूर्य 19/07/2060
बुध 17/02/2018	केतु 17/02/2038	शुक्र 18/02/2044	सूर्य 17/02/2054	चंद्र 17/02/2061

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
17/02/2061	18/02/2079	18/02/2095	18/02/2114	19/02/2131
18/02/2079	18/02/2095	18/02/2114	19/02/2131	00/00/0000
राहु 31/10/2063	गुरु 07/04/2081	शनि 20/02/2098	बुध 17/07/2116	केतु 18/07/2131
गुरु 26/03/2066	शनि 19/10/2083	बुध 01/11/2100	केतु 14/07/2117	शुक्र 16/09/2132
शनि 30/01/2069	बुध 24/01/2086	केतु 10/12/2101	शुक्र 14/05/2120	सूर्य 22/01/2133
बुध 19/08/2071	केतु 31/12/2086	शुक्र 09/02/2105	सूर्य 21/03/2121	चंद्र 23/08/2133
केतु 06/09/2072	शुक्र 31/08/2089	सूर्य 22/01/2106	चंद्र 20/08/2122	मंगल 19/01/2134
शुक्र 07/09/2075	सूर्य 19/06/2090	चंद्र 23/08/2107	मंगल 17/08/2123	राहु 07/02/2135
सूर्य 31/07/2076	चंद्र 19/10/2091	मंगल 01/10/2108	राहु 06/03/2126	गुरु 13/01/2136
चंद्र 30/01/2078	मंगल 24/09/2092	राहु 08/08/2111	गुरु 11/06/2128	शनि 30/06/2136
मंगल 18/02/2079	राहु 18/02/2095	गुरु 18/02/2114	शनि 19/02/2131	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 1 वर्ष 7 मा 17 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु	शुक्र - गुरु	शुक्र - शनि	शुक्र - बुध	शुक्र - केतु
19/04/2025	19/04/2028	19/12/2030	17/02/2034	18/12/2036
19/04/2028	19/12/2030	17/02/2034	18/12/2036	17/02/2038
राहु 30/09/2025	गुरु 27/08/2028	शनि 20/06/2031	बुध 14/07/2034	केतु 12/01/2037
गुरु 24/02/2026	शनि 28/01/2029	बुध 01/12/2031	केतु 12/09/2034	शुक्र 24/03/2037
शनि 16/08/2026	बुध 15/06/2029	केतु 06/02/2032	शुक्र 04/03/2035	सूर्य 14/04/2037
बुध 18/01/2027	केतु 11/08/2029	शुक्र 17/08/2032	सूर्य 25/04/2035	चंद्र 20/05/2037
केतु 23/03/2027	शुक्र 20/01/2030	सूर्य 14/10/2032	चंद्र 20/07/2035	मंगल 14/06/2037
शुक्र 22/09/2027	सूर्य 10/03/2030	चंद्र 18/01/2033	मंगल 18/09/2035	राहु 17/08/2037
सूर्य 16/11/2027	चंद्र 30/05/2030	मंगल 27/03/2033	राहु 20/02/2036	गुरु 13/10/2037
चंद्र 15/02/2028	मंगल 26/07/2030	राहु 16/09/2033	गुरु 07/07/2036	शनि 19/12/2037
मंगल 19/04/2028	राहु 19/12/2030	गुरु 17/02/2034	शनि 18/12/2036	बुध 17/02/2038
सूर्य - सूर्य	सूर्य - चंद्र	सूर्य - मंगल	सूर्य - राहु	सूर्य - गुरु
17/02/2038	07/06/2038	07/12/2038	13/04/2039	07/03/2040
07/06/2038	07/12/2038	13/04/2039	07/03/2040	24/12/2040
सूर्य 23/02/2038	चंद्र 22/06/2038	मंगल 14/12/2038	राहु 02/06/2039	गुरु 15/04/2040
चंद्र 04/03/2038	मंगल 03/07/2038	राहु 02/01/2039	गुरु 16/07/2039	शनि 31/05/2040
मंगल 10/03/2038	राहु 30/07/2038	गुरु 19/01/2039	शनि 06/09/2039	बुध 12/07/2040
राहु 27/03/2038	गुरु 24/08/2038	शनि 09/02/2039	बुध 22/10/2039	केतु 29/07/2040
गुरु 10/04/2038	शनि 22/09/2038	बुध 27/02/2039	केतु 10/11/2039	शुक्र 16/09/2040
शनि 28/04/2038	बुध 17/10/2038	केतु 06/03/2039	शुक्र 04/01/2040	सूर्य 30/09/2040
बुध 13/05/2038	केतु 28/10/2038	शुक्र 27/03/2039	सूर्य 21/01/2040	चंद्र 25/10/2040
केतु 20/05/2038	शुक्र 27/11/2038	सूर्य 03/04/2039	चंद्र 17/02/2040	मंगल 11/11/2040
शुक्र 07/06/2038	सूर्य 07/12/2038	चंद्र 13/04/2039	मंगल 07/03/2040	राहु 24/12/2040
सूर्य - शनि	सूर्य - बुध	सूर्य - केतु	सूर्य - शुक्र	चंद्र - चंद्र
24/12/2040	06/12/2041	13/10/2042	18/02/2043	18/02/2044
06/12/2041	13/10/2042	18/02/2043	18/02/2044	18/12/2044
शनि 17/02/2041	बुध 19/01/2042	केतु 20/10/2042	शुक्र 20/04/2043	चंद्र 14/03/2044
बुध 07/04/2041	केतु 06/02/2042	शुक्र 11/11/2042	सूर्य 08/05/2043	मंगल 01/04/2044
केतु 28/04/2041	शुक्र 30/03/2042	सूर्य 17/11/2042	चंद्र 07/06/2043	राहु 17/05/2044
शुक्र 25/06/2041	सूर्य 15/04/2042	चंद्र 28/11/2042	मंगल 29/06/2043	गुरु 26/06/2044
सूर्य 12/07/2041	चंद्र 11/05/2042	मंगल 05/12/2042	राहु 22/08/2043	शनि 13/08/2044
चंद्र 10/08/2041	मंगल 29/05/2042	राहु 24/12/2042	गुरु 10/10/2043	बुध 26/09/2044
मंगल 30/08/2041	राहु 14/07/2042	गुरु 10/01/2043	शनि 07/12/2043	केतु 13/10/2044
राहु 21/10/2041	गुरु 25/08/2042	शनि 31/01/2043	बुध 28/01/2044	शुक्र 03/12/2044
गुरु 06/12/2041	शनि 13/10/2042	बुध 18/02/2043	केतु 18/02/2044	सूर्य 18/12/2044

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

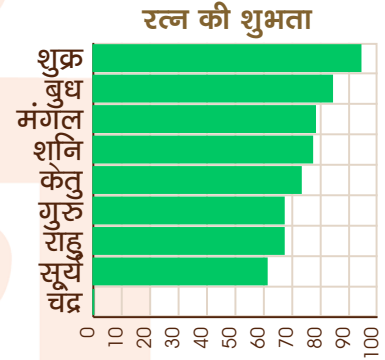
मूलांक	2
भाग्यांक	8
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	94%	सन्तति सुख, सुख, भाग्योदय
पन्ना	बुध	84%	सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
मूंगा	मंगल	78%	भाग्योदय, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	77%	व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	73%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	67%	दम्पति, धनार्जन, धन
गोमेद	राहु	67%	दम्पति, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	61%	सन्तति सुख, दम्पति
मोती	चंद्र	0%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	17/02/2018	47%	0%	84%	84%	67%	100%	64%	55%	86%
शुक्र	17/02/2038	47%	0%	78%	90%	67%	100%	83%	73%	80%
सूर्य	18/02/2044	73%	12%	84%	84%	73%	81%	64%	55%	61%
चंद्र	17/02/2054	67%	25%	78%	90%	67%	94%	77%	55%	61%
मंगल	17/02/2061	67%	12%	91%	72%	73%	94%	77%	55%	80%
राहु	18/02/2079	47%	0%	66%	84%	67%	100%	83%	80%	61%
गुरु	18/02/2095	67%	12%	84%	72%	80%	81%	77%	67%	73%
शनि	18/02/2114	47%	0%	66%	90%	67%	100%	89%	73%	61%
बुध	19/02/2131	67%	0%	78%	97%	67%	100%	77%	67%	73%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/06/2016-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086 08/02/2087-18/07/2088 31/10/2088-05/04/2089	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	धन
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सुख
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	शत्रु से कष्ट

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति चन्द्र कुंडली में सप्तम भाव में है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपके मंगल का दोष भंग हो जाता है अतः इस मंगल के प्रभाव से आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे। फलतः आपका एवं आपके पति का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु पति का स्वभाव अल्प मात्रा में उग्र हो सकता है। लेकिन इसके शुभ प्रभाव से आप जीवन में सम्पूर्ण सुखोपभोग के साधनों को अर्जित करेंगी एवं धन धान्य से युक्त होकर अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।

यद्यपि आपके लिए यह मंगल शुभ फलदायक रहेगा परन्तु इसके कारण आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है लेकिन विवाह अत्यंत ही शांत एवं सुखद रूप से सम्पन्न होगा। इसमें आपको किसी भी प्रकार से विशेष समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाह के पश्चात भी आप का दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। पति के साथ आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे। एक दूसरे को जीवन में पूर्ण प्रेम तथा सहयोग प्रदान करेंगे जिसके कारण आप आनंद पूर्वक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगी।

आपकी चन्द्रकुंडली में सप्तम भाव में मंगल स्थित होने से पति के रूप में आप किसी सुयोग्य एवं सुन्दर पुरुष को प्राप्त करेंगी। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता एवं प्रगाढ़ता रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन में शान्ति तथा प्रसन्नता व्याप्त रहेगी। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करेंगी तथा समाज में मान प्रतिष्ठा तथा यश अर्जित करेंगी। प्रथम भाव पर मंगल की दृष्टि से स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव परिलक्षित होगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आप विद्याध्ययन करने में सफल होंगी तथा परिश्रम पूर्वक उच्च शिक्षा भी प्राप्त कर सकेंगी। परिवार से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग मिलेगा तथा पारिवारिक जीवन भी सुख एवं शान्ति से युक्त

रहेगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को और अधिक सुखमय एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या ऐसे मंगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसकी चन्द्रकुंडली में उचित नियमानुसार मांगलिक दोष भंग हो रहा हो। ऐसे पुरुष के साथ दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करके आप सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी। एक सौभाग्यशाली महिला की तरह जीवन में समस्त सुख संसाधनों से युक्त होकर उसका सुख पूर्वक उपभोग करेंगी। साथ ही आप धन धान्य एवं वैभव से युक्त रहेंगी एवं समाज में ख्याति अर्जित करेंगी।

इसके अतिरिक्त कुंडली मिलान के समय जिस पुरुष की चन्द्रकुंडली में या जन्म कुंडली में मंगल सप्तम भाव में स्थित हो तो यदि अत्यावश्यक न हो तो यत्नपूर्वक इसकी उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भावों में मंगल रहने से आप दोनों का शारीरिक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। इससे दाम्पत्य जीवन में सुखोपभोग में अनावश्यक परेशानी उत्पन्न होगी। इसके अलावा अन्य भावों में स्थित मंगल प्रायः शुभ ही रहेगा एवं जीवन में अनावश्यक व्यवधान तथा समस्याएं उत्पन्न नहीं करेगा। अतः यदि आप सावधानी एवं सोच समझकर कुंडली मिलान करके दाम्पत्य जीवन प्रारंभ करेंगी तो आपका जीवन आनन्द एवं सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान्, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

चन्द्र

तृतीय, भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान्, एवं कंजूस होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन, आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्चल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरों के लिए आप शुभ एवं

अनुकूल रहेंगी।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाग्रबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान्, ज्योतिषी, राजयोगी, न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्त्वाकांक्षी होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरध्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, कोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(17/02/2018 - 17/02/2038)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 17/02/2018 को आरम्भ होकर 17/02/2038 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र पंचम भाव में स्थित है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह मीन में उच्च का जबकि कन्या में निम्न का होता है। शुक्र एक शुभ ग्रह है और भावनात्मक आनन्द, अच्छे स्वाद, आनन्द तथा सुखमय जीवन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। आपकी जन्म कुण्डली में पंचम भाव में स्थित होकर यह एकादश भाव को देख रहा है और इस पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् पंचम भाव संतान, आनंद, कला, आमोद-प्रमोद, मनोरंजन, जुआ या दौंव, प्रेम संबंध, धार्मिक बौद्धिकता, प्रशिक्षण और ज्ञान, प्रचुर धन आदि का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र पंचम भाव में स्थित होकर भाव को प्रबलित कर रहा है। इसके फलस्वरूप आपको इस दशाकाल में कोई छोटी या बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

योगकारक ग्रह शुक्र के पंचम भाव अर्थात् त्रिकोण में स्थित होने के फलस्वरूप आपको इसके दशा काल में उन्नति करने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे एवं आप चल तथा अचल संपत्ति में वृद्धि करेंगे। आप अपने भाग्य को सट्टे-जुए में आजमाने की कोशिश कर सकते हैं या लॉटरी जीत सकते हैं अथवा अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आप विलासी जीवन व्यतीत करेंगे।

व्यवसाय :

आप दलाली का व्यवसाय अपना सकते हैं या सट्टा और इससे मिला-जुलता व्यवसाय कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण और आनन्दमय रहेगा। आपके जीवन साथी हमेशा आपके सहायक होंगे। आपके बच्चे बहुत ही आज्ञाकारी होंगे, आपका आदर करेंगे और आपकी मानसिक शक्ति तथा आत्मविश्वास को बनाए रखने में आपके सहायक होंगे। आपके बच्चे जीवन में प्रगति तथा परिवार का नाम रोशन कर सकते हैं।

**अंतर्दशा :- शुक्र - राहु
(19/04/2025 - 19/04/2028)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 17/02/2018 को प्रारंभ होकर 17/02/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 19/04/2025 को प्रारंभ होकर 19/04/2028 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

सप्तम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के 7वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका निम्न कोटि के लोगों से प्रेम प्रसंग हो सकता है। गरिष्ठ भोजन के शौकीन हो सकते हैं जिससे बीमार हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, दूध और गंगाजल से धोकर, प्रार्थना उपरांत बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में रात्रि भोजन के उपरांत धारण करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - गुरु
(19/04/2028 - 19/12/2030)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 17/02/2018 को आरंभ हुई थी और 17/02/2038 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 19/04/2028 को प्रारंभ होकर 19/12/2030 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 11, 1, 3 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप नीतिज्ञ, विशाल हृदय वाले, पुण्यात्मा व्यक्ति होंगे। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार और अन्य माध्यमों से धनलाभ होगा। निवेश में रुचि होगी। दूरस्थ तीर्थों की यात्रा करेंगे, धर्म में गहन रुचि होगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - शनि
(19/12/2030 - 17/02/2034)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 17/02/2018 को प्रारंभ हुई थी और वद 17/02/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 19/12/2030 को प्रारंभ होकर 17/02/2034 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है।

शनि शुभ ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 12, 4, 7 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप उच्चपद पर आसीन होंगे, सिद्धांतवादी रहेंगे, मजदूरों और गरीबों के मददगार होंगे। अन्य लोगों के विवादों के फैसले कर सकते हैं। अपने पद का इस्तेमाल ईमानदारी से करेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करना श्रेयस्कर होगा :

- पीपल को जल अर्पित करें।
- भोजन करने से पूर्व पहला कौर गाय को दें।
- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।